Volume: 5 Issue: 3 Pages: 120-122

# सामाजिक प्रगतिशीलता का पोषक शिवरीनारायण

**[*1] श्रीमती सरस्वती साहू**

[*1] सहायक प्राध्यापक, बी. एड. विभाग, मौलाना आजाद शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

**Article Info.**
**E-ISSN: 2583-6528**
**Impact Factor (QJIF): 8.4**
**Peer Reviewed Journal**
**Available online:**
**www.alladvancejournal.com**

**Received:** 22/Feb/2026
**Accepted:** 22/March/2026

***Corresponding Author**
**श्रीमती सरस्वती साहू**
सहायक प्राध्यापक, बी. एड. विभाग, मौलाना आजाद शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

**सारांश**
वर्तमान में शिवरीनारायण को 'पर्यटन स्थल' के रूप में विकसित किया जा रहा है। सन् 1996 के पश्चात् शबरी सेतु के निर्माण से शिवरीनारायण अन्य नगरों से प्रथम बार बस मार्ग द्वारा जुड़ा जिससे यहां विकास का मार्ग खुला और शिवरीनारायण तक जनसामान्य की पहुंच हुई। वर्तमान का शिवरीनारायण उन्नत व्यापारिक स्थल के रूप में विख्यात है और यहाँ की लोक संस्कृति को प्रसारित - प्रचारित करने के लिए छत्तीसगढ़ शासन द्वारा शिवरीनारायण महोत्सव का आयोजन एक सराहना के योग्य कदम है। सामूहिक समागमों एवम् आयोजन की श्रृंखला में पंथ मेला महत्वपूर्ण है।प्राचीन काल से शिवरी-नारायण सरीखे तीर्थों ने समाज को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य संपन्न किया है और वर्तमान में भी कर रहे हैं। समाज के समस्त वर्गों को ये जोड़ते हैं। इनके अनंत प्रत्यक्ष और परोक्ष लाभ हैं। पर्यटन एवं विग्रह दर्शन केवल सामान्य लाभ हैं।

**मुख्य शब्द:** शिवरीनारायण, पर्यटन स्थल, समाज, विग्रह दर्शन, महातीर्थयात्रा .....इत्यादि।

## प्रस्तावना:

भारत जाति-प्रजाति, क्षेत्र, भाषा, बोली, पंथ, मजहब जैसी विविधताओं के लिये विश्व में जाना जाता है। तीर्थ हमारे भारतीय जनमानस की मूलभूत एकता व अखण्डता के विचारणा के पोषक व संवर्द्धक हैं। इस संदर्भ में श्री एम. एन. श्रीनिवास का कथन है कि- 'भारत की एकता की अवधारणा मूल रूप से धार्मिक अवधारणा है प्रसिद्ध तीर्थस्थल देश के कोने-कोने में है ब्रिटिश शासन से पहले के समय में संचार और यातायात बहुत घदिया थे। उन दिनों भी तीर्थयात्री अक्सर भयंकर जानवरों, कुख्यात डकैतों, संक्रामक बीमारियों और अभावों आदि के खतरों से जूझते हुए भी सैकड़ों मील पैदल चलान कर तीर्थस्थानों को पहुंचते थे। उनका उद्देश्य पुण्य कमाना होता था। महातीर्थयात्रा प्रदक्षिणा अर्थात भारत भूमि की परिक्रमा करना होती थी। माननीय पूर्व मुरव्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी के राम-काज किन्हें बिना, मोहि कहां विश्राम की तर्ज प्रासंगिकता व प्रामाणिकता दोनों से आबद्ध है। शिवरीनारायण कि सामाजिक सरोकार व महत्व को राम सेतु की अवधारणा की प्रायोगिकता से जोड़कर वे कहते हैं कि- यही हमारा, पूरे हिन्दुस्तान का रास्ता है। यही रास्ता हमें शांति की और ले जाएगा। शिवरीनारायण भगवान राम, प्रभु जगन्नाथ और माता शबरी की नगरी है। त्रेता युग में भगवान राम ने भारत को जोड़ने का काम किया। अयोध्या से लेकर श्रीलंका तक, द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण ने मथुरा से लेकर द्वारिका तक, शंकराचार्य जी ने दक्षिण से लेकर उत्तर तक, स्वामी विवेकानंद ने कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत को जोड़ने का काम किया है। जितने भी हमारे महापुरुष हुए उन्होंने समाज को जोड़ने का काम किया, हैं, विभिन्न वर्गों को एक सूत्र में बांधने का काम किया है।

तीर्थयात्रा शिक्षा, सूचना एवं सांस्कृतिक चेतना का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत रही है। सामयिक समस्याओं के समाधान तथा भविष्य के लिए उपयोगी निधारणा का समुचित परामर्श यहाँ उपलब्ध होते थे। तीर्थ विविध क्षेत्रों से पहुंचे भिन्न-भिन्न सामाजिक - आर्थिक पृष्ठभूमि के जनों का संपर्क क्षेत्र हुए जिनके माध्यम से विभिन्न जीवन शैलियों, प्रथा-परम्पराओं, परिपाटियों, उत्सवों, रीति-रिवाजों, लोकमान्यताओं को संरक्षण एवम् संवर्द्धन मिला।

## विषयवस्तु:

प्राचीन काल से शिवरी- नारायण सरीखे तीर्थों ने समाज को जोड़ने35 का महत्वपूर्ण कार्य संपन्न किया है और वर्तमान में भी कर रहे हैं। समाज के समस्त वर्गों को ये जोड़ते हैं। इनके अनंत प्रत्यक्ष और परोक्ष लाभ हैं। पर्यटन एवं विग्रह दर्शन केवल सामान्य लाभ हैं। पुराने

समय में पदयात्रा ही इसका प्रमुख साधन रहा, यातायात एवं आवगमन के साधन सामाजिक विकास के साथ उपलब्ध होने प्रारम्भ हुए। जनसंपर्क एवं जनसंवाद इनका एक प्रधान पक्ष रखा। शिवरीनारायण भी इन्हीं केन्द्रों में से एक रहा। विभिन्न कालक्रमों में इस की कीर्ति भिन्न भिन्न, नामों से रही, जैसे- सतयुग का बैकुण्ठपुर ही त्रेतायुग में और आज समपुर, द्वापरयुग का विष्णुपुरी तथा नारायणपुर का शिवरीनारायण है। यह सामाजिक उत्थान के पुरोधाओं की समाजोपयोगी, जनोपयोगी, सर्वमङ्गलकारी महत्वाकांक्षाओं के प्रतीक हैं। वैयक्तिक लाभों का हो। यह खजाना है। जनसंपर्क एवं जनसंवाद इनका एक प्रधान पक्ष रखा। शिवरीनारायण भी इन्हीं केन्द्रों में से एक रहा।

तीर्थस्थानों पर आयोजित नाट्यो, पारंपरिक नृत्य, गायन, वादन आदि प्रदर्शन कलाओं के प्रसार हेतु पर्याप्त अवसर होता है। विभिन्न कला-कौशलों आदि के प्रगति में। इन स्थलों का विशेष महत्व है। तीर्थ स्थलों पर आयोजित किए जाने वाले मेलों, महोत्सवों आदि का सामाजिक प्रगति के साथ-साथ आर्थिक विकास व पूँजी -निर्माण में भी विशिष्ट योगदान है। इस संदर्भ में छत्तीसगढ़ के शिवरीनारायण के मेले का भी विशेष महत्व हैं। इसकी विशिष्टता है कि यह अत्यन्त व्यवस्थित होता है। दुकानें पंक्तिबद्ध रूप में लगी होती हैं। जैसे बर्तन की दुकानें, एक पंक्ति में फुल की दुकानें, दूसरी तीसरी पंक्ति में स्थिता मनिहारी की दुकानें तो चैथी पंक्ति स्थित रजाईगद्दों की दुकानें, पांचवीं पंक्ति स्थित सोने-चांदी के आभूषणों की दुकानें तो मनोरंजन - के लिए एक पंक्ति जलपान गृहों, एक पंक्ति में सिनेमा - सर्कस की, अगली पंक्ति कृषि उपकरणों की और अगली पंक्ति जूते-चप्पलों की दुकानों की।

यह नगर के पश्चिम दिशा में महंतपारा की अमरई में और उससे लगे मैदान में माघ पूर्णिमा से महाशिवरात्री तक प्रत्येक वर्ष मेला भरता है। माघ पूर्णिमा के रात्रि पूर्व में यहाँ भजन-कीर्तन, राम-लीला, विभिन्न लोकमानस आयोजन आदि के पश्चात् तीन-चार बजे महानदी में स्नान-आचमन के पश्चात् भगवान शबरीनारायण के दर्शन किये जाते हैं। महंत गौतमदास जी और महंत लालदास जी के अथक परिश्रम ने मेले को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया।

**शिवरीनारायण:** देवालय एवं परंपराएँ के परम्परा खण्ड में वर्णन आता है कि मठ के मुख्तियार पंडित कौशलप्रसाद तिवारी के तथा पंडित रामचंद्र भोगहा के सहयोग एवं योगदान से अमराई में सीमेंट की दुकानें निर्मित करवाने के पश्चात् मेले को व्यवस्थित रूप प्रदान किया गया था। पंडित रामचंद्र भोगहा द्वारा भोगहापारा में सीमेंट की दुकानें बनवाकर मेले को महंतपारा स्थित अमराई से भोगहापारा तक विस्तृत करवाया गया। यहॉ का प्रमुखतम बाजार भोगहापारा में लगता था जिसके लिए भोगहा जी को बाजार के कर वसूली का अधिकार तात्कालीन अंग्रेज हुकूमत द्वारा प्रदान किया गया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात मेले की व्यवस्था और कर वसूली का दायित्व जनपद पंचायत जांजगीर को सौंपा गया था। जबसे शिवरीनारायण नगर पंचायत बना, तब से मेले की व्यवस्था एवं कर वसूली का कार्य नगर पंचायत करती रही। नगर की सेवा समितियों और मठ की ओर से दर्शनार्थियों के रहने, एवं खाने-पीने आदि की सारी व्यवस्थाएँ जिः शुल्क रूप से की जाती है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सन् १९६१ की जनगणना होने के साथ मध्यप्रदेश के मेला एवम् मड़ई की जानकारियाँ इकट्ठी की गई तथा इम्पीरियल गजेटियर के रूप में प्रकाशित किया गया था। इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ के कमाशः छः जिलों रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़ के दुर्ग, बस्तर, सरगुजा आदि के मेला, मड़ई, पर्व एवम् त्योहारों की जानकारी प्रकाशित की गई हैं। इसमें उल्लेख प्राप्त होता है कि छत्तीसगढ़ में शिवरीनारायण, राजिम और पीथमपुर का मेला सौ से अधिक वर्षों से भरता रहा और मेले में एक लाख दर्शनार्थियों के सम्मिलित होने की बात भी आती है।

इस महत्वपूर्ण सामाजिक सम्मिलनकारी मेले में वैवाहिक खरीददारी भी प्रचुर मात्रा में होती थी। जैसे- बर्तन, रजाई-गद्दा, पेटी, सिल लोढ़ा, झारा डुवा, वस्त्र, आभूषण आदि की खरीददारी बहुतायत में की जाती थी। मेले में शिवरीनारायण और अकलतरा के साव स्टोर की मनिहारी दुकान, दुर्ग, धमधा, बलौदाबाजार, बहम्नीडीह, चांपा एवम रायपुर की बर्तन की दुकान, बिलासपुर की रजाई. गद्दे की दुकान, कलकते की पेटी दुकान, चूड़ी-टिकली की दुकानें, सोने-चांदी के जेवरों की दुकाने, नैला के रमाशंकर गुप्ता का होटल और उसके बगल में गुपचुप दुकान, अकलतरा और सक्ती का सिनेमा घर, किसिम किसिम के झूला, मौत का कुंआ, नाटक मंडली, जादू, तथा उड़ीसा का मिट्टी की मूर्तियों की प्रदर्शिनी- पुतरी घर बहुते प्रसिद्ध है। यहां उड़िया संस्कृति को पोषित करने रने वाला वाल सुस्वादिष्ट उखरा बहुतायत में आज भी बिकने आता है।

शिवरीनारायण के इस सामाजिक महत्व के मेले में अपार जनसमूह उमड़ता हैं, जिनमें आसपास के अनेक ग्रामों से लोग आकर भागीदारी करते हैं तथा आनंदित होते हैं। इस मेले के अवसर पर गरिमापूर्ण प्रथा के तहत घर की बहू-बेटियों को लिवा लाने का सम्मानपूर्ण रिवाज है। सांझ ढलने पर गृहिणियां व बहन-बेटियाँ एक-साथ आत्मविश्वास से पूर्ण खरीद-फरोख्त के लिए मेले की जगह पर एकत्रित होती हैं। वे खरीददारी का लुत्फ उठाती हैं, अपनी माल-तोल वाली भाव-भंगिमाओं के साथ वे, समूचा क्षेत्र घेर लेती व माप लेती हैं। वे चाट के ठेलों एवं रेस्टोरेन्टों आदि पर पसंदीदा जायकों का स्वाद लेती देखी जा सकती हैं।

शासन प्रशासन द्वारा यहां दर्शनार्थियों के लिए सुरक्षा व्यवस्था, पेय-जल प्रबंधन विभिन्न शासकीय प्रदर्शनियों आदि की व्यवस्था की जाती है जिससे मेले में उपस्थित होने वाले जनसामान्य जबिक से अधिक लाभान्वित हो सके।

इसी क्रम में शिवरीनारायण में प्रत्येक वर्ष जलझूलनी एकादशी उत्सव भी आयोजित किया जाता है। इस वार्षिक आयोजन को जल क्रीड़ा एकादशी के नाम से भी मनाया जाता है। त्रिवेणी संगम पर इस जल क्रीड़ा उत्सव के उपलक्ष्य में शोभा यात्रा भी निकाली जाती है। मन्दिर-मठ परिसर में भाद्र शुक्ल पक्ष की एकादशी के पुनीत अवसर पर जुल-क्रीड़ा उत्सव का भव्य आयोजन किया जाता है। यहाँ आस-पास के सभी क्षेत्रों के साथ-साथ दूर-दराज से पहुंचे सहभागियों का भी, तांता ता लगा रहता है। इसमें संध्याकाल के समय मठ मंदिर से गाजे-बाजे, भजन-कीर्तन के साथ साधु संत, दर्शनार्थी, भक्त मंडलियों की टोलियां झांकी निकालती हैं जो मन्दिर के सजे रथ पर जुलूस के साथ भगवान श्रीहरि को नगर भ्रमण करा नदी पहुंचते हैं। यहां नौका में भगवान की प्रतिमा को स्थापित कर त्रिवेणी संगम में विहार करा कर पुनः मठ जाता है। मंदिर लाया जाता हैं।

वर्तमान में शिवरीनारायण को 'पर्यटन स्थल' के रूप में विकसित किया जा रहा है। सन् 1996 के पश्चात् शबरी सेतु के निर्माण से शिवरीनारायण अन्य नगरों से प्रथम बार बस मार्ग द्वारा जुड़ा जिससे यहां विकास का मार्ग खुला और शिवरीनारायण तक जनसामान्य की पहुंच हुई। वर्तमान का शिवरीनारायण उन्नत व्यापारिक स्थल के रूप में विख्यात है और यहाँ की लोक संस्कृति को प्रसारित-प्रचारित करने के लिए छत्तीसगढ़ शासन द्वारा शिवरीनारायण महोत्सव का आयोजन एक सराहना के योग्य कदम है। सामूहिक समागमों एवम् आयोजन की श्रृंखला में पंथ मेला महत्वपूर्ण है। यह रामनामी पंथ का मेला है जिसके दो पक्ष हैं प्रथम, राम नवमीं में संत समागम और दूसरा, पौष एकादशी से त्रयोदशी तक चलने वाला तीन दिवसीय मेला। मेले के अंतर्गत सामाजिक वाद विवादों, पारिवारिक झगड़ों आदि के फैसले भी होते हैं। मेले में महासभा का आयोजन एवं सामूहिक विवाह भी संपन्न किये जाते हैं। अगला मेला किस स्थान पर अयोजित किया जाना है इसका निर्णय भी किया जाता है। रामनामी मेला महानदी के तटवर्ती ग्रामों में एक बार महानदी के उत्तर में तो दूसरी बार महानदी के दक्षिण में भरता है।

तीन दिवसीय इस गेले के स्थल पर निर्मित जय स्तंभ के ऊपर कलश चढ़ाया जाता है। दूसरे दिवस रामायण पाठ, रामनाम के भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है और मेलो के समापन दिवस को सामूहिक विवाह तथा सामूहिक भोजन-भण्डारा का आयोजन होता है। मेला स्थल के आसपास जुआ, मांस- मदिरा और वेश्या गमन जैसी कुप्रथा पूर्णतः प्रतिबंधित है। रामलीला मेले का प्रमुख आकर्षण होता है। मेला स्थल के मध्य में 13 फीट ऊंचे जय स्तम्भ का निर्माण किया जाता है, चबूतरे पर भी रामनाम अंकित होता है। इस चबूतरे पर श्रीराम चरित मानस की प्रति रख दी जाती है। पश्चात् रामनाम कीर्तन होता है जिसके अंतर्गत वाद्य यंत्रों के बदले घुंघरू मंडित लकड़ी के चैक से ध्वनि और ताल निकाला जाता है तथा मोर पंख से सुसज्जित तंबूरे से वातावरण राममय हो जाता है। विवाह के समय वर-वधू, की जय स्तम्भ और रामायण को साक्षी मानकर, सात फेरे लगवारे जाते हैं। फेरों के पूर्व महासभा के समक्ष वर और वधू पक्ष को विधिवत् घोषणा पत्र भरना और संस्था द्वारा निर्धारित शुल्क भरना होता है। दहेज मांगना और तलाक लेना पूर्णतः वर्जित है। साथ ही विधवा महिला के मस्तक पर रामनाम देखकर केई व्यक्ति उनसे पुनर्विवाह करा सकता है।

## निष्कर्ष:

विभिन्न कालक्रमों में इस की कीर्ति भिन्न भिन्न, नामों से रही, जैसे-सतयुग का बैकुण्ठपुर ही त्रेतायुग में और आज समपुर, द्वापरयुग का विष्णुपुरी तथा नारायणपुर का शिवरीनारायण है। शिवरीनारायण की यह ऐतिहासिक संस्कृति सामाजिक गुणों का एकीकरण भी है और यह सामूहिकता में ही संभव है। समाज यदि देह है तो तीर्थ उसके प्राण हैं। शिवरीनारायण छत्तीसगढ़ के लोकप्रदेश की प्रतिष्ठा, स्वाभिमान और आत्मसम्मान है, क्योंकि शिवरीनारायण में हमारी संस्कृति और सभ्यता के मूल सूत्र आज भी प्रवाहमान हैं। यह वह सेतु है जिसके प्रथम से अंतिम रज-कण में जन आस्था दृढ़तापूर्वक विद्यमान है। यह हमारा सामाजिक इतिहास एवम् वर्तमान है जो आज का शिवरीनारायण धाम है।

## सन्दर्भ सूची:


1. भट्ट, एस. सी (संपादन), द, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ छत्तीसगढ़ (2003), ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, आईएसबीएन-10-8121207738,
2. जाज्वल्या (पत्रिका), लेख ‘‘हमारा जिला जांजगीर-चांपा‘‘, लेखन साहू ओम प्रकाश, सन् 2008.
3. छत्तीसगढ़ जनमन (मासिक पत्रिका), 2022, छत्तीसगढ़ जनसंपर्क प्रकाशन, शीर्षक संवरने लगा राम वनगमन पथ चंद्रखुरी के बाद शिवरीनारायण।
4. केशरवानी, अश्विनी, माध पूर्णिमा (संवत् 2063) फरवरी 2007, शिवरीनारायण देवालय एवं परंपराएँ, बिलासा प्रकाशन, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।